सत्कार्यवाद (सांख्य दर्शन)

डॉ. विजय कुमार
दर्शनशास्त्र विभाग
एल. एस. कॉलेज, मुजफ्फरपुर

सत्कार्यवाद सांख्य दर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है। यह कारण और कार्य के सम्बन्ध को प्रकाशित करता है। इसके अनुसार कार्य कारण में रहता है, अर्थात् उत्पन्न होने से पहले भी कारण में कार्य का अस्तित्व रहता है। जैसे धट की सत्ता मिट्टी में उस समय भी विद्यमान रहती है जिस समय घट उत्पन्न नहीं होता है। न्याय, वैशेषिक एवं बौद्ध दर्शन ऐसा नहीं मानते। ये असत्कार्यवाद को मानते हैं। असत्कार्यवाद मानता है कि घट मिट्टी में विद्यमान नहीं होता। यह विभिन्न साधनों जैसे चक्र, दन्ड आदि की सहायता से कुम्भकार के द्वारा घट-रूप प्राप्त करता है, जो बिल्कुल नया होता है। यदि मिट्टी में घट की सत्ता होती तो मिट्टी और घट दो शब्द प्रयोग में क्यों आता?

सत्कार्यवाद को प्रमाणित करने के लिए सांख्यकारिका में कहा गया है-

असदकरणात् उपादान ग्रहणात् सर्वसंभवाभावात्।

शक्तस्यशक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।। सांख्यकारिका-६

१. **असदकरणात्-** यदि कार्य कारण में नहीं रहता तो किसी भी प्रयास से उसे उत्पन्न नहीं किया जा सकता। लाख प्रयत्न करने पर भी नीले को पीला नहीं किया जा सकता।

२. उपादान ग्रहणात्- किसी खास़ वस्तु की उत्पत्ति के लिए किसी खास उपादान की आवश्यकता होती है। दही के लिए दूध की जरूरत होती है। दही जब भी बनेगा दूध से ही बनेगा। यानी दही का अस्तित्व दूध में पहले से विद्यमान था।

३. **सर्वसंभवाभावात्-** यदि कारण से कार्य नहीं होता तो किसी भी कारण से कोई भी वस्तु उत्पन्न हो जाती। बालू से तेल निकाला जा सकता और पानी से दही जमाया जा सकता। किन्तु ऐसा नहीं होता। तेल जब भी निकलेगा सरसों या तिल से ही निकलेगा।

४. शक्तस्यशक्यकरणात्- कारण में जो शक्ति होती है उससे ही कार्य उत्पन्न होता है। यदि मिट्टी में घट उत्पन्न करने की शक्ति नहीं होती तो दन्ड और चक्र को कुम्भकार कितना भी घुमाता उससे घट उत्पन्न नहीं होता। अत: सिद्ध होता है कि कार्य कारण में पहले से विद्यमान रहता है।

५. **कारणभावात्-** कारण और कार्य में तादात्म्य सम्बन्ध होता है दोनों में एक लक्षण देखा जाता है। एक ही वस्तु में कारण अव्यक्त तथा कार्य व्यक्त रूप होते हैं। कारण और कार्य एक ही वस्तु की दो दशाएँ हैं, दो स्थितियाँ हैं।

इस प्रकार प्रमाणित होता है कि कार्य उत्पन्न होने से पूर्व कारण में विद्यमान होता है। यही सांख्य दर्शन का सत्कार्यवाद है।